शेख़ फ़रीद - सबद १३

देख फरीदा जु थीआ दाढ़ी होई भूर ॥

सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३७८

देख फरीदा जु थीआ दाढ़ी होई भूर ॥
अगह नेड़ा आइआ पिछा रहिआ दूर ॥९॥

सार: सच्चा ज्ञान जीवन के अनुभवों से सीखने पर निर्भर करता है। अनुभव से सीखना एक सक्रिय प्रक्रिया है, जिसमें ज्ञान के सिद्धांतों को व्यावहारिक उपयोग के साथ जोड़ा जाता है। यह सीख को अमल में लाकर हमारे फ़ैसलों पर असर डालता है और हमें विकास के नए अवसर प्रदान करता है।

देख फरीदा जु थीआ दाढ़ी होई भूर ॥
फरीद का कहना है कि निरंतर चिंतन में मग्न होकर विवेक प्राप्त करने की वजह से दाढ़ी सफ़ेद हो गई है।

अगह नेड़ा आइआ पिछा रहिआ दूर ॥९॥
भविष्य आपकी पहुंच में है क्योंकि अतीत बहुत दूर फिसलता जाता है, जो अज्ञानता से ज्ञानोदय की सक्रिय खोज की ओर बदलाव का प्रतिनिधित्व करता है। (९)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद अतीत को पीछे छोड़ने और आत्म-खोज की परिवर्तनकारी यात्रा में आगे बढ़ने की कला को अपनाने के महत्व पर ज़ोर देते हैं। वर्तमान को संजोकर और कल के बोझ से मुक्त होकर हम अज्ञानता से आत्मज्ञान की खोज की ओर बदलाव का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com